अन्नपूर्णा
चालीसा
एवं स्तोत्र

# अन्नपूर्णा

## चालीसा स्तोत्रम्

प्रकाशक:

卐 नाथ पुस्तक भण्डार
१९४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

दूरभाष : २३२७५३४४

प्रथम संस्करण : सन् २००४

मूल्य : रु० १०.००

*शिवनाथ*

# श्री अन्नपूर्णा चालीसा

## दोहा

विश्वेश्वर-पदपदम की रज-निज शीश-लगाय ।
अन्नपूर्णे ! तव सुयश बरनौं कवि-मतिलाय ।।

## चौपाई

नित्य आनंद करिणी माता,
वर-अरु अभय भाव प्रख्याता ।

जय ! सौंदर्य सिंधु जग-जननी,
अखिल पाप हर भव-भय हरनी ।
श्वेत बदन पर श्वेत बसन पुनि,
संतन तुव पद सेवत ऋषिमुनि ।
काशी पुराधीश्वरी माता,
माहेश्वरी सकल जग-त्राता ।

वृषभारूढ़ नाम रुद्राणी,
विश्व विहारिणि जय ! कल्याणी ।
पतिदेवता सुतीत शिरोमणि,
पदवी प्राप्त कीह्न गिरि-नंदिनि ।
पति-विछोह दुःख सहि नहिं पावा,
योग अग्नि तब बदन जरावा ।

देह तजत शिव-चरण सनेहू,
राखेहु जात हिमगिरि-गेहू ।
प्रकटी गिरिजा नाम धरायो,
अति आनंद भवन मँह छायो ।
नारद ने तब तोहिं भरमायहु,
ब्याह करन हित पाठ पढ़ायहु ।

ब्रह्मा-वरुण-कुबेर-गनाये,
देवराज आदिक कहि गाये ।
सब देवन को सुजस बखानी,
मति पलटन की मन मँह ठानी ।
अचल रहीं तुम प्रण पर धन्या,
कीह्ही सिद्ध हिमाचल कन्या ।

निज कौ तब नारद घबराये,
तब प्रण-पूरण मंत्र पढ़ाये ।
करन हेतु तप तोहिं उपदेशेउ,
संत-बचन तुम सत्य परेखेहु ।
गगनगिरा सुनि टरी न टारे,
ब्रह्मा तब तुव पास पधारे ।

कहेउ पुत्रि वर माँगु अनूपा,
देहुँ आज तुव मति अनुरूपा ।
तुम तप कीह्न अलौकिक भारी,
कष्ट उठायहु अति सुकुमारी ।
अब संदेह छाँड़ि कछु मोसों,
है सौगंध नहीं छल तोसों ।

करत वेद विद ब्रह्मा जानहु,
वचन मोर यह सांचा मानहु ।
तजि संकोच कहहु निज इच्छा,
देहौं मैं मनमानी भिक्षा ।
सुनि ब्रह्मा की मधुरी बानी,
मुख सों कछु मुसुकाय भवानी ।

बोली तुम का कहहु विधाता,
तुम तो जगके स्रष्टाधाता ।
मम कामना गुप्त नहिं तोंसों,
कहवावा चाहहु का मोंसों ।
दक्ष यज्ञ महँ मरती बारा,
शंभुनाथ पुनि होहिं हमारा ।

सो अब मिलहिं मोहिं मनभाये,
कहि तथास्तु विधि धाम सिधाये ।
तब गिरिजा शंकर तव भयऊ,
फल कामना संशयो गयऊ ।
चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाशा,
तब आनन महँ करत निवासा ।

माला पुस्तक अंकुश सोहै,
कर मँह अपर पाश मन मोहै ।
अन्नपूर्णे! सदापूर्णे,
अज-अनवद्य अनंत पूर्णे ।
कृपा सागरी क्षेमंकरि माँ,
भव-विभूति आनंद भरी माँ ।

कमल बिलोचन विलसित भाले,
देवि कालिके ! चण्डि कराले ।
तुम कैलास मांहि है गिरिजा,
विलसी आनंद साथ सिंधुजा ।
स्वर्ग-महालछमी कहलायी,
मर्त्य-लोक लछमी पदपायी ।

विलसी सब मँह सर्व सरूपा,
सेवत तोहिं अमर पुर-भूपा ।
जो पढ़िहहिं यह तव चालीसा,
फल पाइंहहिं शुभ साखी ईसा ।
प्रात समय जो जन मन लायो,
पढ़िहहिं भक्ति सुरुचि अधिकायो ।

स्त्री-कलत्र पति मित्र-पुत्र युत,
परमैश्वर्य लाभ लहि अद्भुत ।
राज विमुख को राज दिवावै,
जस तेरो जन-सुजस बढ़ावै ।
पाठ महा मुद मंगल दाता,
भक्त मनोवांछित निधि पाता ।

## दोहा

जो यह चालीसा सुभग, पढ़ि नावैंगे माथ ।
तिनके कारज सिद्ध सब साखी काशीनाथ ॥

# अन्नपूर्णा स्तोत्रम्

**नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्य रत्नाकरी**
**निर्धूताखिलघोर पावनकरी प्रत्यक्ष माहेश्वरी ।**
**प्रालेयाचलवंश पावनकरी काशीपुराधीश्वरी**
**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥**

हे मातः अन्नपूर्णे ! तुम सदा आनन्द करने वाली हो, तुम्हारे हाथ में निरन्तर वर और अभय रहते हैं, तुम सुन्दरता रूप रत्नों की आकार (खान) हो, तुम अपने भक्तों के समस्त पाप नाश करके उन्हें पवित्र कर देती हो, तुम्हीं सबकी ईश्वरी प्रत्यक्ष माहेश्वरी हो, तुमने ही

गिरिराज हिमालय के वंश को (पार्वती बनकर ) पवित्र किया था, माँ! तुम्हीं काशीपुरी की महारानी हो और तुम्हीं सम्पूर्ण संसार के लिए अन्नपूर्णा हो इसलिए सबकी माता भी तुम्हीं हो, सो कृपा करके मुझे भी भिक्षा दो।

**नाना रत्न विचित्र भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी**
**मुक्ता हारविलम्बमान विलसद्वक्षोज कुम्भान्तरी ।**
**काश्मीरा गरुवासितारुचिकरी काशीपुराधीश्वरी**
**भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥**

हे भगवती अन्नपूर्णे ! तुम्हीं अनेक प्रकार के रत्नों के द्वारा विचित्र आभूषण धारण करती हो, तुम्हारा शरीर सुवर्ण के आडम्बर

से अलंकृत है। तुम्हारे उरोज रूपी दो कुम्भों के मध्य का भाग हृदय में लम्बायमान मुक्ताहार से सुशोभित है। तुमने अपने शरीर को कुमकुम और अगरादि सुगन्धित द्रव्यों से कान्तिमान किया हुआ है, तुम्हीं काशीपुरी की अधीश्वरी हो, हे मातः अन्नपूर्णे ! कृपा करके मुझे भिक्षा दो।

**योगानन्द करी रिपुक्षयकरी धर्मार्थ निष्ठाकरी**
**चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्य रक्षाकरी ।**
**सर्वैश्वर्य समस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी**
**भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ३ ॥**

हे मातः ! योगी पुरुषों के योग के द्वारा तुम्हीं आनन्द देती हो, अपने भक्तजनों के शत्रुओं का नाश करती हो, हे माँ ! धर्म और धन

का साधन करने में भी तुम्हीं सहायता करती हो अतः उन कार्यों में दृढ़ निष्ठा (प्रीति) करती हो। तुम्हारा तेज चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशित है, तुम अपनी संपूर्ण शक्ति से त्रिलोक की रक्षा करती हो। अपने भक्तों के समस्त मनोरथों को पूर्ण करके उनके लिए सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करती हो, हे काशीपुराधीश्वरी ! कृपा करके तुम मुझे भी भिक्षा दो।

**कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी**
**कौमारी निगमार्थगोचर करी ओंकारबीजाक्षरी ।**
**मोक्ष द्वार कपाट पाटनकरी काशीपुराधीश्वरी**
**भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥**

हे देवि ! तुमने कैलाश पर्वत की कन्दराओं में अपना स्थान बनाया है, तुम्हीं गौरी (अत्यन्त गौर वर्ण वाली) उमा (महादेव की लक्ष्मी स्वरूप) अथवा (शिवरूप पति प्राप्ति की कामना से तपश्चर्या करने के हेतु उद्यतकरी हुई) और शंकरी (शंकर महादेव की पत्नी) हो। तुम्हीं कौमारी (स्वामी कार्तिकेय की शक्तिस्वरूपा) और निगमों (वेद-शास्त्रादि ग्रन्थों) के अर्थ करने वाली हो, तुम्हीं ओंकारस्वरूपा बीजाक्षर वाली हो, हे भगवति ! मोक्षमार्ग के द्वार खोलने में केवल एक तुम्हीं समर्थ हो, हे काशीपुराधीश्वरी ! कृपा करके मुझे भिक्षा दो।

**दृश्यादृश्यप्रभूतपावन करी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी**
**लीला नाटक सूत्र भेदनकरी विज्ञानदीपांकुरी ।**

**श्री विश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी**
**भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ५ ॥**

हे अन्नपूर्णे ! तुम सम्पूर्ण स्थूल व सूक्ष्म जीवों को भोजन दान कर उनको सब प्रकार की शक्तियों से सुसम्पन्न करने वाली हो, यह निखिल ब्रह्माण्ड तुम्हारे उदर रूप भाण्ड (पात्र) में स्थित है, तुम्हीं अपनी शक्ति द्वारा सम्पूर्ण चराचर को स्वकीय कार्यों में प्रवृत्त करती हो और तुम ज्ञानरूप दीपक की शिखा हो, एवं तुम्हीं अपनी विशेष चातुरता से श्रीमान् विश्वनाथ भगवान् के मन को सन्तुष्ट करती हो अतएव काशीपुरी की तुम्हीं अधीश्वरी हो, कृपया मुझे भिक्षा प्रदान करो।

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमान कुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी
सर्वानन्द करी दृशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥

हे ईश्वरी ! तुम्हीं भूमि के ऊपर स्थित हुए सम्पूर्ण जनसमुदाय की ईश्वरी हो, तुम्हीं ऐश्वर्यसम्पन्न और अन्न व धन से भरपूर अन्नपूर्णा माता हो, तुम्हारे केशपाश के केश नीले वर्ण से शोभा पाते हैं और हे परमेश्वरी ! तुम्हीं सबको अन्नदान देती हो, तुम सदा आनन्द और शुभदशा प्रदान करने वाली हो। हे काशीपुराधीश्वरी ! कृपा करके मुझे भी भिक्षा प्रदान करो।

आदीक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्यांकुरा शर्वरी ।
कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ७ ॥

हे परमेश्वरी ! दीक्षित होकर संसार में जो शिक्षा प्रदान करते हैं, उन सबको तुमने ही उपदेश किया है, तुमने ही महादेव के तीन भावों का विधान किया है। तुम स्वर्ग, मर्त्य और पाताल इन तीनों लोकों में अपनी माया से परमेश्वरी प्रतीत होती हो । तुम ही लोक में गंगा यमुना और सरस्वती होकर प्रवाहित हो रही हो। जिस वस्तु का कभी नाश न हो, ऐसी मोक्षरूपा वस्तु देने वाली भी तुम्हीं हो, अभिलाषी पुरुषों की

सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ण करने वाली हो। हे मातः ! तुम अपने भक्तजनों की उन्नति करती हो, हे काशीपुराधीश्वरी हे अन्नपूर्णे माँ ! कृपा करके मुझे भिक्षा प्रदान करो।

**देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी**
**वामास्वादुपयोधर प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।**
**भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी**
**भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ८ ॥**

हे महामाया ! तुम देवी (भक्तों का दुःख दूर कर उन्हें प्रसन्न करने वाली) हो, तुम्हारा शरीर विचित्र रत्नों के आभूषणों से अलंकृत है, तुम्हीं सतीरूप से दक्षप्रजापति के घर उत्पन्न होकर दाक्षायणी

कहलाई हो। तुम स्वाभाविक सुन्दरी हो, तुम सब जगत् की माता हो। इस कारण अपने स्तनों का मधुर दुग्धपान करवाकर हितसाधन करती हो। तुम सबकी महेश्वरी हो अतएव सबका सौभाग्य करती हो, केवल एक तुम हीं अपने भक्तों के मनोरथों को पूर्ण करती हो और संकटों को टालकर शुभदायक दशा की प्रवृत्ति करती हो, अतएव कृपा करके मुझे भी भिक्षा दान करो।

**चन्द्रार्कानल कोटिकोटिसदृशाचन्द्रांशुविम्बाधरी**
**चन्द्रार्काग्निसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।**
**मालापुस्तकपाशसांकुशधरी काशीपुराधीश्वरी**
**भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ९ ॥**

हे भगवती ! तुम करोड़ों चन्द्रमाओं असंख्य सूर्य और अनगिनत अग्नि की समान हो, तुम्हारे आनन की अपार छवि मानो चन्द्रमा की किरणों को धारण करती है। तुमने सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि के तुल्य देदीप्यमान कुण्डल धारण किये हैं, चन्द्रमा और सूर्य के समान, तुम्हारा उज्ज्वल वर्ण है, हे मातः ! तुमने अपने एक-एक हाथ में क्रम से माला, पुस्तक, पाश और अंकुश धारण किये हैं, अतएव कृपा करके तुम्हीं मुझे भिक्षा प्रदान दो।

**क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी**
**साक्षान्मोक्षकरी सदाशिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी ।**
**दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी**
**भिक्षां देहिकृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १० ॥**

हे मातः ! तुम्हीं अपने क्षत्र का आश्रय देकर सबकी रक्षा करती हो, सबको अभयदान देती हो, इसी से तुम सबकी माता हो। तुम्हीं कृपा की सागररूप हो, अतएव साक्षात् मोक्षपद की देने वाली भी हो, तुम सदा सबका मंगल विधान करती हो, निखिल विश्व का पालन-पोषण करने वाले श्री महादेवजी की श्रीवृद्धि करने वाली भी तुम्हीं हो। दक्ष प्रजापति के यज्ञ में विघ्न करके उसे रोदन कराने वाली तुम्हीं हो। हे मातः ! तुम्हीं सबको आरोग्य प्रदान करती हो, हे माँ ! कृपा करके तुम्हीं भिक्षा प्रदान करो।

**अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राणवल्लभे।**
**ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥ ११ ॥**

हे अन्नपूर्णे ! तुम समस्त सौभाग्यों से सदा भरपूर हो, हे श्रीमती ! तुम्हीं कल्याणकर्ता महादेवजी की प्राणों के समान प्यारी हो, अतएव हे पार्वती ! ज्ञान और वैराग्य की सिद्धि के अर्थ मुझे भी भिक्षा प्रदान करो।

**माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।**
**बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवत्रयम् ॥ १२ ॥**

मैं केवल यही भिक्षा चाहता हूँ कि गिरिजाकुमारी पार्वती मेरी माता, महाप्रभु श्रीशिवजी महाराज मेरे पिता और महादेवी जी के अनन्य भक्त मेरे बन्धु-बान्धव हैं एवं तीनों लोक मेरे स्वदेश हैं, ऐसा ज्ञान सदा मेरे हृदय में दृढ़भाव से स्थित रहे।

*॥ श्री अन्नपूर्णा स्तोत्रं संपूर्णं ।*

# अन्नपूर्णा माता की आरती

जय अन्नपूर्णा माता जय अन्नपूर्णा माता ।
ब्रह्म सनातन देवी शुभ फल की दाता ।। टेक
अरिकुल पद्म विनाशिनि जन सेवक त्राता ।
जगजीवन जगदम्बा हरिहर गुणगाता ।। जय०
सिंह को वाहन साजे कुण्डल हैं साथा ।
देव वृन्द जस गावत नृत्य करत ताथा ।। जय०
सतयुग रूपशील अति सुन्दर नाम सती कहलाता ।
हेमाचल घर जनमी सखियन सँग रराता ।। जय०
शुंभनिशुंभ बिदारे हेमाचल स्थाता ।

सहस्त्र भुजा तनु धरिके चक्र लियो हाथा ॥ जय०
सृष्टिरूप तू ही है जननी शिव संग रंगराता ।
नदी भृङ्गी बीन लही हे हाथन मदमाता ॥ जय०
देवन अरज करत तव चित को लाता ।
गावत दे दे ताली मन में रङ्गराता ॥ जय०
श्री प्रताप आरती मैया की जो कोई गाता ।
सदा सुखी नित रहता सुख संपत्ति पाता ॥ जय०

# "मंत्र रामायण"

गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस के दोहे चौपाइयाँ मंत्रों का कार्य करते हैं।

ऐसे ही कुछ मंत्रों का संग्रह मंत्र रामायण नामक इस पुस्तक में किया है। इन मंत्रों का सम्पुट लगाकर पाठ करने से निश्चय ही भिन्न-भिन्न मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इन्हें बहुतों ने आजमाया है। आप भी अपनी मनोकामना पूर्ण कीजिये।

:: प्रकाशक ::

नाथ पुस्तक भण्डार

१९४, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

हिन्दी पंचांग **तिथि निर्णय** ( बहुरंगी ) एवम् **पंडित पंचांग** ( दो रंगों में छपा )

## दोनों ही पंचांग अधिक उपयोगी सामग्री के साथ प्रस्तुत हैं।

* विक्रम, शाका व राष्ट्रीय सम्वत् * मुख्यतः तारीख * तिथि का समय कब से कब तक * शुभ-अशुभ योग * नक्षत्र राशि प्रवेश * प्रत्येक दिन की चन्द्र स्थिति * चन्द्रमा-सूर्य-मंगल आदि ग्रहों का उदय-अस्त * अमुक व्रत-त्यौहार की कथा तथा कब और कैसे मनायें * छुट्टियाँ * विवाह आदि मुहूर्त्त * मूल, भद्रा, पंचक * सूर्य-चन्द्र ग्रहण और कुम्भ * ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र-यंत्र-उपाय * राशि ज्ञान-फल, शुभ वार-रंग-अंक सहित * राशि रत्न धारण विधि * दिन-रात का चौघड़िया * राहु ( नेष्ट ) काल- किस समय शुभ कार्य नहीं करना चाहिए * अभिजित काल- अमुक दिन शुभ मुहूर्त्त न होने पर भी शुभ कार्य कब करें * दिशाशूल परिहार- यात्रा के दिन दिशाशूल होने पर भी यात्रा दिशाशूल दोष दूर कर कैसे करें * दूध-अखबार हिसाब का कोष्टक * मौसम * तेजी-मंदी ( मार्किट रुख ) * विश्व घटना चक्र * देवी-देवताओं के चित्र व उनके जपनीय मंत्र * देव पूजा में ओऽम् ( ॐ ), स्वास्तिक ( 卐 ), दीपक, मंगल कलश, नारियल, घंटा-घड़ियाल व परिक्रमा का महत्व * आरती क्यों और कैसे करें * भगवान राधा कृष्ण की लीला स्थली मथुरा-वृन्दावन के मंदिर में मनाये जाने वाले पर्व-उत्सवों का विशेष वर्णन आदि।

साइज २८ X ४४ से. मी. पृष्ठसंख्या २६

मूल्य : रु. २०.००
: रु. १५.००

प्रकाशक :

**卐 नाथ पुस्तक भण्डार**

१९४, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : २३२७५३४४